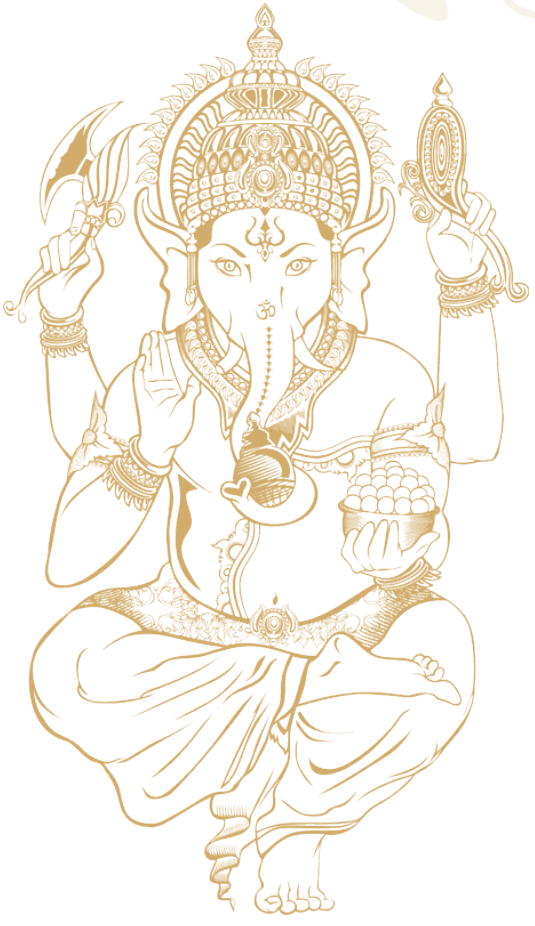

Chinmay Jain

Niharika jain

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121158904

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
30/12/1995	जन्म तिथि	28/07/1999
शनिवार	दिन	बुधवार
घंटे 18:45:00	जन्म समय	19:40:00 घंटे
घटी 29:41:02	जन्म समय(घटी)	34:48:36 घटी
India	देश	India
Chhindwara	स्थान	Gwalior
22:04:00 उत्तर	अक्षांश	26:12:00 उत्तर
78:58:00 पूर्व	रेखांश	78:09:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:14:08	स्थानिक संस्कार	-00:17:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:52:35	सूर्योदय	05:40:41
17:40:21	सूर्यास्त	19:06:40
23:48:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:52

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह		राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 4वर्ष 3मा 24दि		29:42:18	मिथु	लग्न		मक	21:58:58	चन्द्र 8वर्ष 1मा 0दि	
सूर्य		14:33:41	धनु	सूर्य		कर्क	11:13:21	राहु	
24/04/2020		05:06:38	मेष	चंद्र		मक	12:33:19	28/08/2014	
25/04/2026		29:14:20	धनु	मंगल		तुला	15:49:53	27/08/2032	
सूर्य	12/08/2020	03:34:45	मक	बुध	व	कर्क	08:02:18	राहु	10/05/2017
चन्द्र	10/02/2021	05:20:48	धनु	गुरु		मेष	09:55:12	गुरु	03/10/2019
मंगल	18/06/2021	17:02:10	मक	शुक्र		सिंह	11:14:24	शनि	09/08/2022
राहु	13/05/2022	25:29:47	कुंभ	शनि		मेष	22:25:11	बुध	26/02/2025
गुरु	01/03/2023	29:42:56	कन्या	राहु	व	कर्क	19:04:42	केतु	16/03/2026
शनि	11/02/2024	29:42:56	मीन	केतु	व	मक	19:04:42	शुक्र	16/03/2029
बुध	17/12/2024	05:27:57	मक	हर्ष	व	मक	21:22:19	सूर्य	08/02/2030
केतु	24/04/2025	00:49:20	मक	नेप	व	मक	09:04:07	चन्द्र	10/08/2031
शुक्र	25/04/2026	08:05:54	वृश्चि	प्लूटो	व	वृश्चि	14:00:49	मंगल	27/08/2032

लग्न-चलित

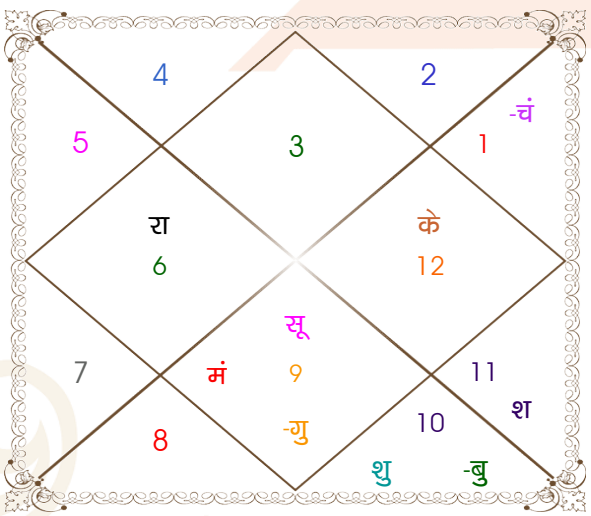

लग्न-चलित

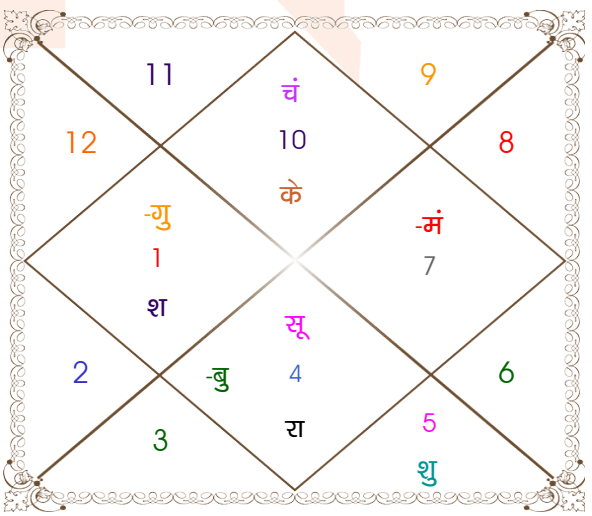

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

बेपदउंल श्रंपद का वर्ग सिंह है तथा छपींतपां रंपद का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार बेपदउंल श्रंपद और छपींतपां रंपद का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

बेपदउंल श्रंपद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु बेपदउंल श्रंपद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

छपींतपां रंपद मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु छपींतपां रंपद कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

बेपदउंल श्रंपद तथा छपींतपां रंपद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com